Shiv Ki Aarti

ॐ जय शवि ओंकारा, स्वामी जय शवि ओंकारा।
ब्रहमा, वषि्णु, सदाशवि, अर्द्धांगी धारा॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 1 |

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे।
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 2 |

दो भुज चार चतुर्भुज दसभुज अत सिोहे।
त्रगिुण रूप नरिखते त्रभिुवन जन मोहे॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 3 |

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रपिुरारी कंसारी कर माला धारी॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 4 |

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादकि गरुणादकि भूतादकि संगे॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 5 |

कर के मध्य कमण्डलु चक्र त्रशिूलधारी।
सुखकारी दुखहारी जगपालन कारी॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 6 |

ब्रहमा वषि्णु सदाशवि जानत अववि‍ेका।
मधु-कैटभ दो उ मारे, सुर भयहीन करे॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 7 |

लक्ष्मी व सावति्री पार्वती संगा।
पार्वती अर्द्धांगी, शविलहरी गंगा॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 8 |

पर्वत सोहैं पार्वती, शंकर कैलासा।
भांग धतूर का भोजन, भस्मी में वासा॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 9 |

जटा में गंग बहत है, गल मुण्डन माला।
शेष नाग लपिटावत, ओढ़त मृगछाला॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 10 |

काशी में वरिाजे वश्विनाथ, नन्दी ब्रहमचारी।
नति उठ दर्शन पावत, महमिा अत भिारी॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 11 |

त्रगिुणस्वामी जी की आरत जिो कोइ नर गावे।
कहत शवािनन्द स्वामी, मनवान्छति फल पावे॥
ॐ जय शवि ओंकारा॥ 12 |